

उद्देश्य - इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वरलिपि पद्धति, भारतीय स्वर वाद्यों एवं उसके घरानों व रागशास्त्र का विस्तृत ज्ञान देना और संगीत ग्रन्थों व संगीतज्ञों के जीवन से अवगत कराना है। **संगीत(स्वरवाद्य)**

क्र० सं०	कोर्स का नाम	कोर्स कोड	अंक	श्रेयांक
2	स्वरवाद्य - रागों और तालों का अध्ययन I	एम0पी0ए0एम0आई0 - 102	100	4
प्रथम खण्ड	भारतीय स्वरलिपि पद्धति एवं भारतीय स्वर वाद्य			
	*इकाई 1 -स्वरलिपि पद्धतियों का अध्ययन एवं तुलना।			
	*इकाई 2 -भारतीय स्वर वाद्यों (तत् वसुधिर) की उत्पत्ति एवं विकास।			
	*इकाई 3 -तन्त्र वाद्य के घराने।			
द्वितीय खण्ड	*रागों का विस्तृत अध्ययन			
	इकाई 1 -राग निर्माण, वादी, सम्वादी, अनुवादी एवं विवादी स्वर का महत्त्व।			
	इकाई 2 -राग एवं रागिनी की व्याख्या, रागों का समय चक्र, ग्राम और मूर्च्छना।			
	इकाई 3 -पाठ्यक्रम के रागों का पूर्ण वर्णन, तुलना एवं स्वर समूह द्वारा राग पहचानना।			
तृतीय खण्ड	संगीतज्ञों का जीवन परिचय, ग्रन्थ अध्ययन एवं निबंध लेखन			
	इकाई 1 - संगीतज्ञों (एन० राजम, उ० हाफिज अली खॉं, उ० बिस्मिल्लाह खॉं, पं० वी०जी०जोग वअन्नपूर्णा देवी) का जीवन परिचय एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत में योगदान।			
	इकाई 2 -संगीत के प्रसिद्ध ग्रन्थों (नाट्यशास्त्र , बृहद्देशी , स्वरमेलकलानिधि व संगीत दर्पण) का अध्ययन।			
	इकाई 3 -संगीत संबंधी विषयों पर निबंध लेखन।			
चतुर्थ खण्ड	*स्वरलिपि व ताललिपि में लिखना			
	इकाई 1 -मसीतखानी गत का परिचय, पाठ्यक्रम के रागों में मसीतखानी गत, स्थाई व अन्तरे के तोड़ों को लिपिबद्ध करना।			
	इकाई 2 -रजाखानी गत का परिचय, पाठ्यक्रम के रागों में रजाखानी गत, स्थाई व अन्तरे के तोड़ों को लिपिबद्ध करना।			
	इकाई 3 -पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों को लयकारी (दुगुन, तिगुन, चौगुन वआड) सहित लिपिबद्ध करना।			

राग - श्यामकल्याण , जैजैवन्ती , अहीर भैरव , झिंझोटी , पूरिया कल्याण , बैरागी , बिहागडा , भैरव , केदार व मालकौंस
ताल - तीनताल , झपताल , एकताल , आडाचारताल , रूपक , चारताल , धमार व 9 मात्रा की ताल

सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री -

- वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ० प्र०।
- श्रीमती शान्ति गोवर्धन, संगीत शास्त्र दर्पण।
- डॉ० लक्ष्मीनारायण गर्ग, राग विशारद(दोनों भाग), 4. पं० विष्णु नारायण भातखण्डे, भातखण्डे क्रमिक पुस्तक मालिका संगीत कार्यालय, हाथरस, उ० प्र०।
- (सभी भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ० प्र०।
- श्री एस०एस० परान्जपे, भारतीय संगीत का इतिहास